Artistic Narration: *A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art* **ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247**
Vol. VIII. 2016 **IMPACT Factor - 3.9651**

गोगी सरोज पाल

निकिता जैन सिंघल
शोधार्थी (मेरठ)
jnikita5665@gmail.com

चित्रों के साथ बचपन का प्यार, एक चित्रकार बनने का सपना, एक प्राकृतिक कोमल संवेदनशीलता व मानवीय जोश, अभिव्यक्ति की अनिवार्यता, अपने पिता धर्मपाल व लेखक चाचा यशपाल की स्वतन्त्रता की भावना का अनुकरण करने की इच्छा व चित्रकला को पेशे के रूप में चयनित करने की अनुमति मांगने पर माता–पिता द्वारा प्रतिरोध पर उनकी प्रतिक्रिया की इच्छा ने गोगी सरोजपाल को चित्रकला क्षेत्र की दहलीज पर ला खड़ा किया।

एक चार फुट, ग्यारह इंच की लड़की, अकेली, स्कर्ट व कैनवास जूते पहने व हाथ में छोटा अटाचे (बक्सा) लिये, एक छोटे शहर से आने वाली बस के अंतिम स्टेशन पर नीचे उतरती है। वह भीड़ में एक होती है व अपना बक्सा खींचती हुई उसी भीड़ में लुप्त हो जाती है। यह समय 1968 था व वो जिस शहर में आयी थी वो दिल्ली थी। लड़की का दृढ़ संकल्प था कि वह एक महानगर को अपनाकर यहाँ एक स्वतन्त्र चित्रकार के रूप में अभ्यास करते हुए निवास करेगी। इस प्रकार का निर्णय लेने वाली शायद ये प्रथम भारतीय महिला थी। ये लड़की गोगी सरोज पाल ही थी जिन्होंने अपने दृढ़ विश्वास व नारीत्व की भावना को व्यक्त करने के लिए अपनी रचनात्मक दृश्य कल्पना को विकसित करना प्रारम्भ किया। वे अपने समय को भविष्य में प्रतिबिम्बित करना व स्वयं को समकालीन के रूप में प्रांसगिक करना चाहती थी।

गोगी सरोज पाल का जन्म नेओली, यू॰पी॰ में 1945 ई0 में हुआ। ये सुप्रसिद्ध लेखक स्व0 यशपाल जी की भतीजी थी। अपने करियर के रूप में कला को चयनित करने की अनुमति माँगने पर परिवार की प्रतिक्रिया के विषय में गोगी जी कहती है।

''जब मैने अपने पिता को बताया कि मै कला का अनुकरण करना चाहती हूँ, तो उन्होंने वापस लिखा कि मैं अपने निर्णय के लिए स्वयं जिम्मेदार हूँ व मुझे उसे सही सिद्ध करना होगा।''

गोगी ने दो साल तक 1961 व 1962 कॉलेज ऑफ आर्टस, वनस्थली, राजस्थान में अध्ययन किया। तत्पश्चात् 1967 में गोगी ने कॉलेज ऑफ आर्टस लखनऊ में प्रवेश लिया। तत्पश्चात् दिल्ली के कॉलेज ऑफ आर्ट्स में प्रवेश लिया। वास्तव में गोगी ग्राफिक कला में विशेषज्ञता प्राप्त करना चाहती थी परन्तु किन्ही कारणवंश उन्हें ग्राफिक कला विभाग में प्रवेश नही मिला जिस कारण उन्होने पेंटिग्स में स्नात्तकोत्तर अध्ययन किया। तदन्तर 1969 से गोगी ने चित्रशालाओं व कैम्पस में लगातार भागीदारी निभायी।

गोगी सरोज पाल के अनुसार ''एक छात्रा के रूप में मै विद्रोही थी व उस समय पश्चिमी कला शैली का अनुकरण करने की प्रचलित प्रवृत्ति के स्थान पर मैंने अपनी प्रवृत्ति का अनुकरण किया।''

यह विद्रोही (क्रान्तिकारी) प्रवृत्ति शायद अनुवांशिक थी। पाल की दादी प्रेमादेवी जो एक शिक्षाविद् व लाहौर के अनाथालय के विद्यालय में अध्यापिका थी, ने अनेक सामाजिक मानदण्डों का विरोध किया। उस समय उच्च व मध्यम वर्गीय महिलाएँ घर से बाहर निकलते समय साड़ी ब्लाउज पहनने पर भी उसके ऊपर तीन मीटर की चादर अपने ऊपरी हिस्से को ढ़कने के लिए ओढ़ती थी व केवल ढ़की हुई घोड़ा गाड़ी व तांगो में सफर करती थी। एक दिन उनकी दादी ने लाहौर के अनारकली बाजार में अपनी चादर उतार दी व पूर्ण रूप से ढके होने पर भी केवल चादर न होने के कारण उन्हें नंगी–नंगी कहकर सम्बोधित किया गया। गोगी को अपनी दादी के चादर ओढने की परम्परा पर रोक लगाने के लिए गर्व था। इसी ने इन्हें भारत का नारीवादी प्रतीक बनाया।

अपनी दादी पर हुई ये टिप्पणियाँ कलाकार के जीवन का हिस्सा बन गयी। जहाँ भी उनके चित्रों की आकृतियाँ नग्न, कामुख है, वहाँ गोगी ने नग्नता, शर्म व नारीत्व के इसी विचार को उजागर किया। वे जिसे 'Being a Women' कहती है, वे उसे अपनी दादी व अनाथालय में मिली लड़कियों व औरतो से जोड़ती है, जो मानती है कि भारतीय नारी धरती के निकट है व असमान समाज में पूर्ण गरिमा के साथ जीने की ताकत रखती है।

उनकी यह धारणा तथा सरोकार कि उन्हें समकालीन महिला कलाकार के रूप में प्रांसगिक बने रहना है, बहुत ही दृढ़ है तथा बड़ी बहादूरी से उन्होंने इस व्यवसाय की असुरक्षाओं का सामना किया। डिजाइनर के रूप में सीमित आय पर कार्य करते हुए उन्होने प्रख्यात कलाकृतियों की श्रृंखलाओं का अनुकरण किया। इन्होंने 1970–72 व 1976–77 Women Polytechnic, New Delhi में 1975–76, कॉलेज ऑफ आर्टस नई दिल्ली व 1979–80 व 1982–83 में जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय नई दिल्ली के कला विभाग में अध्यापन कार्य किया।

प्रारम्भिक समय की कठिनाइयों के विषय में गोगी कहती है ''हालांकि शुरूआती वर्ष कुछ कठिन थे। कई दीर्घाओं ने मेरे काम की प्रदर्शनी की सहमति देने के बाद मना कर दिया।'' उन्होंने इसका हल खोजा व अपने घर सह स्टूडियों को आर्ट गैलरी में बदल दिया। वे कहती है, ''अब मै कभी–भी जब चाहूँ अपना काम प्रदर्शित कर सकती हूँ।

70 के दशक में गोगी जी व उनके पति सुप्रसिद्ध कलाकार वेद नायर जी अपने तारा अपार्टमेन्ट के घर में अपनी बैठक प्रदर्शनी के लिए प्रसिद्ध थे। आज भी 'ईस्ट ऑफ कैलाश' की एक साधारण सी गली में स्थित अपने घर के बेसमेनट में इस कलाकार जोड़े ने छात्रों के लिए एक खुला स्टूडियो बनाया है, जहाँ छात्रों को कार्य करने व कलाभ्यास करने की आज्ञा प्रदान की गयी हैं। यहाँ छात्र इनसे सलाह व विचार विमर्श हेतु भी मिल सकते है।

स्वतन्त्र कलाकार के रूप में अपने करियर के दौरान उन्होने माँ व शिशु, बंदी, हेली कॉमट, Visit to a Valley of Flowers, Eternal Bird, हटयोगिनी, शक्ति, काली, नायिका, कामधेनू, किन्नारी, Human landscape, Dancing Horse, Paper Boat- Vision of dreams आदि विषयों पर चित्रों की श्रृंखलाओं को चित्रित किया।

गोगी ने अब तक लगभग 45 एकल प्रदर्शनियाँ आयोजित की, अनेक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में विदेशो में भाग लिया व अनेको सामूहिक प्रदर्शनियाँ भारत में की। अनेकों कार्यशालाएं स्थापित की व अनेको सम्मान व पुरस्कार प्राप्त किए।

उनका प्रारम्भिक कार्य यथार्थवादी अभिव्यंजना के अधिक सदृश है। परन्तु समय के साथ उन्होने साधारण व अधिक पारम्परिक कलाकृति, जो अधिक बड़ा प्रभाव डालते है, पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। उनका कार्य समाज के सम्मुख 'आइना' प्रस्तुत करता समझा जाता है। यह आसमान लैंगिक सम्बन्धों को दर्शाता हैं।

गोगी को जब बरसों बाद कुछ अच्छी किताबे पढ़ने का मौका मिला और जामा मस्जिद के घने इलाके में रहकर औरतों की जिन्दगी को करीब से जानने का मौका मिला तो उनकी कला में निर्णायक बदलाव आया।

आपातकाल के दौरान एक बार पुलिस स्टेशन के चक्कर काटने पड़े तो चीजे नए ढ़ंग से नजर आयी। पुलिस, चोर व आम आदमी के चेहरों में कितना फर्क है कितनी समानता यह सब सोचने का मौका मिला।

गोगी कहती है ''उन्ही दिनों बेन शॉन की अद्‌भुत पुस्तक 'द शेप ऑफ कान्टेन्ट' मुझे मिल गयी। इस किताब ने मुझे बहुत सीखाया।.... उससे पहले जॉन बर्जर के लेखन ने भी प्रभावित किया था। मॉरिस ग्रेब्ज की एक कलाकृति अंधी चिड़िया मुझे बहुत पसन्द थी।''

1987 में दिवराला के सती काण्ड ने देश भर को उद्वेलित किया था। गोगी ने अपनी एक चित्र श्रृंखला में इस बहस को ध्यान में रखा व इन्होंने रूपकंवर हत्याकाण्ड पर टिप्पणी दूसरी ही तरह से दी। इस चित्र श्रृंखला मे अनेक चित्रों मे कई पुरूष बैठे है और सामने मेज पर एक स्त्री औंधी पड़ी है।

जामा मस्जिद के तंग इलाके से शुरू होकर तारा अपार्टमेन्टस की तथाकथित आधुनिक दुनिया में गोगी ने अपने चेहरों को एक खास तरीके की करूणा, ममता व उदासी के साथ पहचाना है। एक गहरी मानवीय समझ के साथ गोगी ने स्त्रियों, पुरूषों व बच्चों की दुनिया को अपने चित्रों में जगह दी। गोगी के चित्र अंजली इला मेनन' की तरह क्लासिक दुनिया से भी रिश्ता बनाए रहते है परन्तु गोगी के चित्रों में अधिक चमक या फिनिश न होने के कारण उदासी और अकेलेपन की एक–दूसरी ही दुनिया दिखायी देती है। अंजली इला मेनन की नग्न स्त्रियाँ कभी–कभी बहुत एन्द्रिय नजर आती है, कुछ वैसा ही जैसा उन्हे पुरूष देखना चाहते है परन्तु गोगी ने अपने कैनवस में अगर नग्न स्त्री को भी पेंट किया है तो वहाँ एन्द्रियता महत्वपूर्ण नही रह गयी है। एक दुबली, पतली, कमजोर–सी नग्न औरत प्रेक्षक को रिझाएगी नही, वह पुरूषों को उनकी कैद से मुक्त होने की कोशिश करेगी। गोगी के चित्रों में भारतीय स्त्री की जो हालत व तस्वीर मिलती हैं, उसमें गहरी व मार्मिक सच्चाई हैं।

नारी का चित्रण करना गोगी की चित्राकृतियों का महत्वपूर्ण लक्षण है। ये चित्राकृतियाँ ससन्दर्भ होती हैं, जिसमें नारी का समाज मे स्तर व उसका शोषित रूप परिलक्षित होता है। गोगी के चित्रों में नारी को विभिन्न मुद्राओं, पशुओं की सवारी करते दिखाया गया है, जो काल्पनिक व मिथक–सा प्रतीत होता हैं।

एक बार नई दिल्ली में ललित कला अकादमी की सुप्रसिद्ध गढ़ी कार्यशाला में सामुदायिक स्टुडियों के अपने कोने में पेंटिग से घिरी गोगी ने बताया– ''मेरी पेंटिग में मेरा औरत होना बहुत महत्वपूर्ण है। उसके लिए मुझे कोई शर्मिन्दगी नही महसूस होती हैं। औरत होने का जो अनुभव है, उसका मै खूब रचनात्मक इस्तेमाल करती हूँ। मुझे तो औरत होना एक लाभप्रद स्थिति नजर आती है। आप पूछते है कैसे? बच्चा पैदा करने का जो अनुभव है, सचमुच वही कितने कमाल की बात है। रचनात्मकता का कितना तीखा अहसास हैं उसमें। बच्चे को पैदा करने, उसे बड़ा करने के अनुभव ने मुझे पेण्ट करना भी सीखाया है। संक्षेप में, मुझे औरत होने की कोई तकलीफ नही।''

गोगी के चित्रों में उनकी दुनिया उनके व समाज के व्यवहार के तरीकों के चारों ओर घुमती हैं। वह अपने चित्रों मे प्रदर्शन के लिए अपने स्वयं के अभिनेता की रचना करती है..... कभी–कभी ये वास्तविक संवेदनशील व्यक्ति होते है, जो जीवन का भार उठाए हुए है व दुनिया के सुखों व दुखों से तालमेल कर रहे है। कभी–कभी वह उन्हे अपने चित्रों में और अधिक आसानी से भूमिका प्रदर्शन के लिए प्रयुक्त करने हेतू उन्हें अतिरिक्त दृश्य प्रतीक व रूप प्रदान करती है, जो उनके रचनात्मक अनुभवों की जमापूंजी से, अनुष्ठानों से, मिथकों से या धर्म से सम्बन्धित होते है। नायिका निर्माण के विषय में गोगी कहती है– ''भारतीय पौराणिक कथाओं में सीमित संख्या में नायिकाएं है, मै उनमें अपनी स्वयं की नायिका जोड़ना चाहती हूँ, वहाँ महिला के अन्य कई पहलू है जो दर्शाये नही गये हैं।''

गोगी ने अपने चित्रों में नारी सम्बन्धित विभिन्न भेंदो के प्रस्तुतीकरण हेतु कल्पना व नियमों के साथ में सम्मिश्रण किया। उनकी कामधेनू श्रृंखला को ही ले लिया जाये तो उन्होने इच्छा पूर्ण करने वाली गाय की मूतियाँ व चित्र बनाये जिनके शीर्ष नारी सदृश है।

गोगी सरोजपाल नारी के नारीत्व व उसके मनोभावों पर अपना ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित रखती है और उनके रंग भी उसी मोहकता के अनुरूप होते है। रंगो के प्रयोग में गोगी चटख रंगो का प्रयोग करती है उनका कहना है कि, ''जब मैं छात्रा थी तो बहुत तेज रंगो का प्रयोग करती थी, वो अध्यापकों को क्षुब्ध कर दिया करते होंगे, लेकिन मै हमेशा रंगों में विश्वास करती थी और आज भी यह उसी रूप में सच है।''

अत्यधिक सराही गयी स्वयवंर श्रंखला से गोगी की नायिका किन्नारी के नग्न आकृतियों के उन्होने पंख लगा दिए व बाल खुले छोड़ दिए, वह क्रिमसन रंग के ग्वाश पर टेढ़ी बैठी है, नैन नक्श तराशे हुए है, लाल रंग की लिपस्टिक से होठ प्रकाशित है व आँखे गहरी सोच में व्यस्त है। गोगी की नायिका सर्वत्र भारी वक्षस्थल वाली, आकर्षक व कामुख है।

'All these flowers are for you' नामक श्रंखला में गोगी ने अपनी नायिका को फूल से भरी प्रकृति के बीच स्थित किया जो उन्हें व्यस्त संसार से शान्त वातावरण में लाने का एक उत्तम स्थान प्रतीत होता हैं।

श्रंगार श्रंखला में गोगी की नायिका स्वयं को सजाती है। कामधेनु के रूप में नारी प्रतिमा घरेलू गाय के शरीर में मिला दी गयी है। अन्य श्रंखलाओं मे नारी मधुमक्खी के रूप में फूलो पर बैठी है तो कही नारी नतृक घोड़े हैं।

प्रारम्भिक 1980 की 'Being a Woman' श्रृंखला में गोगी ने परखा कि किस प्रकार नारी आँखे बन्द कर मानदण्डों को स्वीकार करती है। गोगी का कहना है, ''मैं सामाजिक सम्बन्धों व पौराणिक धारणाओं से मंत्रमुग्ध हूँ, हम जिन लोक साहित्य व विश्वासों का वजन ढोये जा रहे है, उनकी गवेषणा मेरा कार्य है। हमे अपनी मान्यताओं को सिर्फ आगे ही नही बढ़ाना चाहिऐ वरन् उनकी जाँच भी करते रहना चाहिए।'' बहुमुखी प्रतिभा की धनी इस नारीवादी कलाकार ने अपना सजृनात्मकता की कैनवस के साथ–साथ अन्य माध्यमों से भी अभिव्यक्ति की जैसे ग्राफिक प्रिन्ट, सिरेमिक, स्थापना कला, ज्वैलरी, बुनाई, फोटोग्राफी आदि।

गोगी ने 1977 से 1981 के बीच नई दिल्ली में गढ़ी स्थित ललित कला अकादमी के ग्राफिक प्रिन्ट स्टुडियों में कार्य किया। उनके अनुसार छापा बनाने के प्रति उनका रूझान अत्यन्त व्यक्तिगत अनुभव के रूप में हुआ। जब वह लखनऊ कला विद्यालय में विद्यार्थी थी तब सन् 1964 में काष्ठ उत्कीर्णन को उन्होने अत्यन्त मोहक काम पाया। गोगी के छापों के पात्र और ढाँचा औपचारिकता लिए हुए है, जिनमें स्थान या पर्यावरण स्थित है। उनके छापों की आकृतियों में निहित भावनाओं को स्पष्ट परिभाषित नही किया जा सकता है। संयोजन में आयतन के लिए रेखाओं का समाविष्ट अति सुन्दर रहता है। इसके अतिरिक्त टोन द्वारा भी आयतन का प्रभाव उन्होनें अपने छापों में बड़ी सुन्दरता से किया है। ग्राफिक प्रिन्ट के द्वारा उनकी सजृनात्मक अभिव्यक्ति की योग्यता को देखते हुए उन्हें तृतीय वर्ल्ड प्रिन्ट बिनाले, लंदन, बगदाद (1980), 14वाँ, 15वाँ प्रिन्ट बिनाले लुब्जियाना, यूगोस्लाविया (1981–83), बेडफोर्ड प्रिन्ट बिनाले, यू॰के॰ (1982), 9वीं इन्टरनेशनल त्रिनाले ऑफ आरिजनल कलर्ड ऑफ ग्राफिक प्रिन्ट, स्वीटजरलैण्ड (1982), इन्टरनेशनल प्रिन्ट बिनाले, त्रिनो इटली (1984) इण्डियन ग्राफिक प्रिन्ट एक्सीबिशन इन फिनलैण्ड, जर्मनी व यूगोस्लावलिया (1986), प्रिन्ट मेंकिग इन इण्डिया – एक प्रदर्शनी, जो पाल लिंगरैन द्वारा संग्रहित की गयी, व (1988) यू॰एस॰ए॰ के अनेक शहरो में प्रदर्शित की गयी, मे अपने छाया प्रदर्शन का सुअवसर प्राप्त हुआ।

गोगी को 5वें व 8वें त्रिनाले भारत (1982 व 1993–94) में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया, इन दोनो ही अवसरों पर उन्होनें अपनी बहुमाध्यमिक सजृनात्मकता का प्रयोग कर अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में इन्स्टालेशन स्थापना कला प्रस्तुत कर अपना योगदान दिया। अपनी बहुमाध्यमिक स्थापना कला स्वयंवर व

सिंहावलोकन के लिए गोगी ने सजृनात्मक बुनाई को स्थापना कला के भाग के रूप में प्रस्तुत किया। व पोण्टा साहिब, हिमाचल प्रदेश में बुनाई की कार्यशाला स्थापित की।

1981–82 में कभी–कभी गोगी अपने गढ़ी के पेंटिग स्टूडियो के स्थान पर सिरेमिक स्टुडियो में पहुच जाती थी व अपने हाथ से पॉट को आकार देना व मिट्टी के मानव शीर्ष गढ़ना प्रारम्भ कर देती थी। इन सिरेमिक पॉटस व मानव शीर्षों को उन्होने अपनी जहाँगीर आर्ट गैलरी, बाम्बे की 1982 की एकल प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया। बाद में वे शीर्ष नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट द्वारा इण्डियन वूमन स्कल्पचर द्वारा आयोजित मूर्तिकला की प्रदर्शनी के लिए चुने गये। पोण्टा साहिब के भम्रण के दौरान टेराकोटा पागो ने इन्हे आकर्षित किया, इन्होने इन पात्रों को अपनी स्वयं की सजृनात्मक दृश्य आकृति के रूप में बनाने का निर्णय लिया व Artists Studio Gallery, New Delhi में 1991 में प्रदर्शनी आयोजित की।

बीते समय में Pathways Art Gallery में चार दशकों के दौरान ग्वाश से लेकर तैल व सिरेमिक में बनाए गये नारी शीर्ष एक साथ प्रदर्शित हुए। 1973 में जल रंग द्वारा चित्रित नारी शीर्ष के पार्श्व चित्रों का जोड़ा सबसे पुराना है। अगर 1985 के कार्य में बादलों से घिरी सुडौल सुन्दरता है तो 1989 के ग्वाश से 2012 के तारों से भरे कार्य में पंखो वाली किन्नारी उड़ती हैं। व्यंग्य पूर्ण नती विनोदिनी पारम्परिक प्रतीत होती है और 'All these flowers are for you' में वो पृष्ठभूमि मे फूलों से युक्त बरामदें मे हैं।

अन्य अनेको माध्यमों में कार्य करने के साथ–साथ गोगी ने लेखन के द्वारा भी अपनी अभिव्यक्ति दी उनकी फुलकारी किताब इसका साक्षात प्रमाण है जिसमें गोगी ने अनेक कहानियों के साथ अपने चित्र भी प्रदर्शित किये।

'Letter to Punnu from Garhi Studio' नामक किताब मे गोगी ने अपने पुत्र को लिखे अपने पत्र प्रकाशित किये व साथ में अपने छापा चित्रों को प्रदर्शित किया।

इसके अतिरिक्त उन्होने अपने चित्र श्रंखलाओं को किन्नारी एण्ड किन्नारी मन्त्राज, बिंग ए वूमेन, नती विनोदिनी, स्वयवरम्, हठ योगिनी आदि पुस्तको के रूप में प्रस्तुत किया।